मनोज कुमार प्रीत की कहानियों का विशिष्ट शिल्प-पक्ष

डॉ.यशवीर दहिया
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी
एस.के.डी. यूनिवर्सिटी, हनुमानगढ़
yashveer57@gmail.com
Mob - 9416377867

प्रस्तावना:-

मनोज कुमार प्रीत की कहानियों का शिल्प पक्ष विशेष रूप से उल्लेखनीय है, वे परम्परा और आधुनिकता के बीच के संघर्ष को गहनता से उकेरते है। जिससे उनकी रचनाएं समकालीन समाज की जटिलताओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है। उनकी भाषा, सरल, प्रवाहपूर्ण और संवेदनशील होती है जो पाठकों को कहानी से जोडने में सफल होती है। यह वस्तु और शिल्प की दृष्टि से पाठकों को सोचने पर मजबूर करती है।

जीवन से जुडी भाषा का प्रयोग:-

मनोज कुमार प्रीत की कहानियों में जीवन की वास्तविकता और पात्रों की गहरी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उन्होंने सरल और प्रभावी भाषा का उपयोग किया है। उनकी लेखनी में कठिन शब्दों का प्रयोग कम ही होता है, जिससे पाठकों को पात्रों से जुड़ने में आसानी होती है। '' मैंने तो उसे अग्नि की लपटो में ही पाया था हे राम इतना अनर्थ! इंसान की विकट परिस्थितियां इतनी हावी हो जाती है कि स्वयं को जलाने ने से भी नही हिचकता।'' 1. ये जमीन से जुडे हुये साहित्यकार है जो इन्होंनें जीवन के हर पहलु को देखा है वही वर्णन कहानियों मे किया है।

कठिन शब्दों का प्रयोग:-

मनोज कुमार प्रीत की कहानियों में कठिन शब्दों का प्रयोग न्यूनतम होता है, जिससे उनकी लेखनी अधिक सुलभ और प्रभावी बनती है। वैसे इन्होंने कहानियों में कई जगह कठिन शब्दों का प्रयोग भी किया है जैसे - चोंगा, आगन्तुक, खपरेल, रेस्तरों, अनुबंधित, रहस्योदघाटन आदि।

निषेधात्मक क्रिया का प्रयोग:-

मनोज कुमार प्रीत की कहानियों में नकारात्मक क्रियाओं का प्रयोग उनके पात्रों की आंतरिक संघर्षों और सामाजिक वास्तविकताओं को उजागर करने के लिए किया गया है। नकारात्मक क्रियाओं का उपयोग पात्रों की मानसिक स्थिति और उनके निर्णयों को दर्शाने के लिए किया गया है। निषेध बोधक की प्रवत्ति 'करवट' और 'अस्तित्वहीनता' कहानियों में देखी जा सकती है।

व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग:-

मनोज कुमार प्रीत की कहानियों में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग उनके लेखन की विशेषता है। उन्होंने अपने पात्रों और समाज की विडंबनाओं को उजागर करने के लिए व्यंग्य का सहारा लिया है, जिससे उनकी कहानियाँ अधिक प्रभावी और विचारोत्तेजक बन पाई '' मेरी इस घोषणा उपरांत भी लोग मुझे दोहरी दृष्टि से परखते मानों मैं कोई अभद्र कार्य कर बैठी हूँ जबकि खोखले कानून विचित्र दुनिया से मुझे कुरेदने का प्रयास करते है।'' 2.

उनकी लेखनी में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग समाज की विसंगतियों और मानवीय कमजोरियों को उजागर करने के लिए किया गया है। इससे पाठकों को समाज की वास्तविकताओं पर सोचने और विचार करने का अवसर मिलता है।

घुमावदार भाषा का प्रयोग:-

मनोज कुमार प्रीत की कहानियों में घुमावदार भाषा का प्रयोग उनकी लेखनी की विशेषता है। उन्होंने अपने पात्रों की आंतरिक दुनिया और समाज की जटिलताओं को प्रस्तुत करने के लिए इस शैली का उपयोग किया है, जिससे उनकी कहानियाँ अधिक प्रभावी और विचारोत्तेजक बन पाई हैं। "इस आयु में युवा वर्ग कितना परिपक्व और अपरिपक्व होता है जहां किसी विषय का निर्णय लेना उसके लिए घातक सिद्ध होता है वही अभिभावक भी अपनी आयु भर की पूंजी की मानसिकता पर खिन्न हो जाते है।"3.

इसमें उन्होंने घुमावदार भाषा का प्रयोग किया है, जिससे पात्रों की मानसिक स्थिति और उनके निर्णयों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उनकी लेखनी में घुमावदार भाषा का प्रयोग समाज की विसंगतियों और मानवीय कमजोरियों को उजागर करने के लिए किया गया है। इससे पाठकों को समाज की वास्तविकताओं पर सोचने और विचार करने का अवसर मिलता है।

तत्सम शब्दों का प्रयोग:-

तत्सम शब्द वे होते हैं जो संस्कृत से सीधे हिंदी में आए हैं और जिनका रूप व उच्चारण अधिकांशतः संस्कृत जैसा ही रहता है। इस प्रकार के शब्दों का उपयोग साहित्यिक लेखन में गहराई और प्रभाव पैदा करने के लिए किया जाता है। मनोज कुमार प्रीत की कहानियों में यदि तत्सम शब्दों का प्रयोग हो, तो यह शब्द प्रायः कथा की शुद्धता, गम्भीरता, और ऐतिहासिकता को बढ़ाते हैं। उदाहरण के रूप में:

संस्कार – यह शब्द संस्कृत से लिया गया है और इसका अर्थ होता है अच्छी आदतें।

धर्म – यह शब्द भी संस्कृत से आया है और इसका अर्थ होता हैं आध्यात्मिक मार्ग।

शक्ति – इसका अर्थ होता है बल ।

ज्ञान – यह शब्द उच्च बौद्धिक क्षमता और विवेक को दर्शाता है।

साधना – यह शब्द विशेष रूप से ध्यान या तपस्या के संदर्भ में उपयोग किया जाता है।

प्रकृति – इसका मतलब है प्राकृतिक वातावरण।

कहानियों में प्रयुक्त भाषा शैलियां:-

मनोज कुमार प्रीत की कहानियों में ऐसे शब्द न केवल कथा की शैली को शास्त्रीय और गम्भीर बनाते हैं, बल्कि इनसे पाठक को भारतीय संस्कृति और साहित्य की गहरी समझ भी प्राप्त होती है। मनोज कुमार प्रीत द्वारा प्रयुक्त **भाषा शैलियाँ** उनकी लेखनी को विशिष्ट और प्रभावशाली बनाती हैं। उनकी कहानियों में विभिन्न प्रकार की भाषाशैलियाँ देखने को मिलती हैं, जो न केवल साहित्यिक दृष्टि से मजबूत होती हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में भी गहरी छाप छोड़ती हैं। जैसे-

साधारण और सरल भाषा:

मनोज कुमार प्रीत अपनी कहानियों में आम बोलचाल की भाषा का उपयोग करते हैं, जिससे पाठक आसानी से उनके विचारों और भावनाओं से जुड़ सकते हैं। इस शैली का प्रयोग वे आम आदमी के जीवन, संघर्ष, और भावनाओं को सरलता से प्रस्तुत करने के लिए करते हैं।

भावनात्मक भाषा

उनकी कहानियों में गहरी भावनाएँ और संवेदनाएँ व्यक्त होती हैं। वे पाठक को संवेदनाओं के स्तर पर जोड़ते हैं, जिससे पाठक की मनोस्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

काव्यात्मक और साहित्यिक भाषा

मनोज कुमार प्रीत कभी-कभी काव्यात्मक और साहित्यिक शब्दों का उपयोग भी करते हैं, जो उनके लेखन में एक विशेष गहराई और प्रभाव लाता है। ये शब्द उनके लेखन को और भी सजीव और आकर्षक बना देते हैं।

दर्शनिक भाषा

उनकी कहानियाँ कभी-कभी दर्शन और जीवन के गहरे अर्थों से भरी होती हैं, जहां वे जीवन, मृत्यु, धर्म, और संघर्ष पर गहरी सोच व्यक्त करते हैं। यह भाषा पाठक को जीवन के दार्शनिक पहलुओं पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

इन शैलियों का प्रयोग करके, मनोज कुमार प्रीत अपनी कहानियों को न केवल पाठकों के लिए समझने में सरल बनाते हैं, बल्कि उन्हें गहरे विचार और संवेदनाओं के साथ जोड़ने में भी सक्षम होते हैं। उनकी लेखनी में शब्दों का प्रयोग बहुत ही विचारशील और प्रभावशाली होता है, जो पाठक को जीवन के विभिन्न पहलुओं पर सोचने के लिए प्रेरित करता है।

निष्कर्ष:-

मनोज कुमार प्रीत की भाषा सीधी, सरल तथा स्पष्ट है । कहानियों का विशिष्ट शैली में वार्तालाप स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कहानियों में बिम्बों प्रतीकों के माध्यम से यह कहानीकार दूसरे कहानीकारों से अलग है। इनका अभिव्यक्ति पक्ष पूरा अधिकर है। जीवन से जुड़ी भाषा से प्रयोग कहानियों में करने के कारण यह पाठक को अपनी ओर खींच लेती है। अभिव्यक्ति की सादगी तथा भाषा की सरतला के कारण यह पाठकों को दूर तक अपने संग बहा ले जाने में सक्षम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. हारे हुए चेहरे - मनोज कुमार प्रीत।
2. यातनागृह - मनोज कुमार प्रीत।
3. स्मृतियों के खण्हर - मनोज कुमार प्रीत।
4. दर्पण अपना-अपना - मनोज कुमार प्रीत।
5. शून्य से निन्यानवें तक - मनोज कुमार प्रीत।
6. काल चक्र - मनोज कुमार प्रीत।
7. अपने-अपने बुत्त - मनोज कुमार प्रीत।
8. मैं राम नहीं हो सकता - मनोज कुमार प्रीत।
9. अनछुए सपनें - मनोज कुमार प्रीत।
10. जीवेम षरदः षतम् - मनोज कुमार प्रीत।
11. कुछ तो कहा होगा - मनोज कुमार प्रीत।